# आधुनिककवितामेंजीवनसम्बंधीविचार-धाराएँ

**Suryakanth**
Research Scholar
Department of Hindi, Bangalore University, Bangalore

साहित्यऔरसमाजकाअपनाएकविशिष्टऔरअटूटसम्बंधहै।

समाजसेसाहित्यऔरसाहित्यसेसमाजप्रभावितहोनासाहित्यकीवस्तुऔरविश्लेषणमेंदेखाजारहा है।

येदोनोएकदूसरेकेलिएपूरकऔरप्रेरकहैकहेंगेकोईअतिशयनहींहोगा।मनुष्यएकसामाजिकप्राणि होनेकेकारणउसकाअविभाज्यअंगबनकरजीवन-यापनकररहाहै।

वहस्वयंदैवदत्तबुद्धिमत्ताकेकारणचिंतनशीलप्राणीभीबनारहनादेखरहेहैं। अत: अन्यप्राणियोंकेअपेक्षाकृतउसकाजीवनमहत्वकाबनाहुआहै।समय, परिवेश, परिवर्तनआदिकेसाथचलनेवालामानवकेचित्तमेंनयीबातें, नयीसोच, नयेविचारआदिआनाभीस्वाभाविकहै। साहित्यकारोंइसप्रकारकीप्रवृत्तिदेखीजासकतीहै। समाजकेअत्यंतनिकटहोतेहुएअपनेसूक्ष्मग्राहीनेत्रोंसेस्थिति-गतियोंकीओरध्यानदेकर, उससेप्रेरितकविहृदयअनेकभावोंकोजन्मदेताहै। फलत: भावअक्षरोंमेंपरिवर्तितहोकरविचारकेरूपमेंप्रवहितहोताहै।

आदीकालीनकाव्योंसेलेकरआधुनिकयुगीनकाव्यप्रकारोंतकयहदेखनेकेलिएपायेजातेहैं। कविअपनेसमयकेप्रतिनिधित्वकरताहैऔरकभीयथार्थताकोजन्मदेताहैतोकभीकाल्पनिकताको। कल्पनामेंभीयथार्थकालेपनदेखसकतेहैं। येविचारधाराएँ समसामयिक जनता के लिए मार्गदर्शक भी हैं। काव्य कर्म में दो उद्देश्य रखे जाते हैं। एक मनोरंजनात्मक हो तो दूसरा है संदेशात्मक है। वस्तुत: समाज के लिए इन दोनों की आवश्यकता भी है।

मनुष्य का मूल स्वभाव है कि अपने जीवन में प्रगति करना। उसके लिए पूरक वातावरण और प्रेरणा की आवश्यकता है। साहित्यकार इसकी भूमिका निभाते हैं और पाठकों की नाडी पकड़ कर आवश्यक सामग्री दे देते हैं जो जीवन को उन्मुख बना देती है। सामाजिक जीवन में कर्मी अकर्मी दोनों प्रकार के व्यक्तियों को देखा जा सकता है। कर्मी अपनी अंतिम साँस तक कोई न कोई कर्म करते रहते हैं किन्तु अकर्मी कर्मी की कमाई पर अवलम्बित होकर अपना समय के साथ जीवन को भी बर्बार करता रहता है। इस प्रकार के अनेक लोग आम जनता की नज़रों भी आते हैं और साहित्यकारों की। किन्तु एक अंतर तो यह कि आम आदमी चुप जाता है लेकिन साहित्यकार वैसा नहीं रह सकता। उसपर गम्भीर चर्चा करते हैं तथा अपनी आकुलता को अभिव्यक्त करते हैं। मैथिली शरण गुप्त की ये पंक्तियाँ इस संदर्भ के लिए उल्लेखनीय हैं–

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रह के कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ भी उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

गुप्त जी ने सरल शब्दों में अकर्मी की खिल्ली उड़ायी है। मानव का जन्म ही दुर्लभ है। मिला हुआ इस नर जीवन को व्यर्थ करने वालों के लिए यह एक चेतावनी भी है। साधारणतया मानव का कर्मी, कुकर्मी, अकर्मी बनना अपने पले परिवेश पर निर्भर होता है। कर्म का कार्य का महत्व जानने के लिए भी काफी मात्रा में जीवनानुभव की आवश्यकता भी है। किशोरावस्था में कार्य या कर्म पर आधारित शिक्षा दी जाती है तो स्वयं जानने का अवसर मिल जाता है। यह शरीर जो भगवान द्वारा निर्मित है, उसे अपने कर्मों से सार्थक बना देने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। यह बात हर किसी के लिए लागू होती है। प्रत्येक मनुष्य को अपनी अंतरात्मा इस दिशा में सचेत करती रहती लेकिन उसकी पुकार सुनायी नहीं देगी या सुनने का अभ्यास नहीं रहा होगा। फलत: उसे दु:ख सहना ही पडता है। अत: कर्मपरआधारितजीवनकीआवश्यकताहै।

समाजमेंजनसंख्याअपनीसीमासेबाहरजाचुकीहै। हरजगहभीडमचीरहतीहै। अपनेमनतकचैनसेनहींरहपारहाहै। इसभीड़-भाड़मेंआनंदकेक्षणोंतकखोदेनेकासमय आ गयाहै। अपनेशेषजीवनकोशांतरीतिसेबितानेकेलिएभीनहींरहनेकीस्थितिउद्भवहुईहै। उक्त विचार पर जयशंकर प्रसाद जी ने मार्मिक रूप से कहने प्रयास किया है-

ले चलो मुझे भुलावा देकर
मेरे नाविक ! धीरे-धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी
अम्बर के कानों में गहरी,
निश्चल प्रेम-कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे।

यह तो सत्य ही है कहीं भी अवनी में निरवता नहीं है। कवि जिस वातावरण की अपेक्षा करते वह उनके लिए मृगमरीचिका बन चुकी है। कोलाहरभरित इस समाज साँस लेना भी मुश्किल हो चुका है। जीवन आस्वादन करने के लिए भी दुस्तर होता जा रहा है। हर कवि इसी मानसिकता पर अधारित रहते हैं कहना असम्भव है क्योंकि कुछ कवियों जीवन का रसास्वादन भी किये हैं। उनका विचार इसके पूरे विरुद्ध है। उनके लिए जीवन सुखदायक भी बना हुआ है। इस दृष्टि से कवि अपने-अपने दृष्टिकोन से देखने के कारण उनका अभिव्यन भी भिन्न होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने एक ओर लिखा है-

जग है असार सुनती हूँ
मुझको सुख-सार दिखलाता:
मेरी आँखों के आगे
सुख का सागर लहराता।

उक्त पंक्तियों में कवयित्री ने स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है कि यह असार संसार नहीं है सुखसागर है। सम्भवत: कवयित्री ने इसका पूर्ण अनुभव किया होगा। जीवन सम्बंधी विचार-धाराएँ अपने दृष्टकोन अलग होने के कारण उसमें एकरूपता देखी नहीं जा सकती है। सत्य दोनों पक्ष में जरूर होगा।

जीवन किसी एक का कभी नहीं होगा। संसार के हर व्यक्ति अपना खास जीवन होता है। अपने समय में जिस प्रकार का अनुभव होता रहेगा उसी प्रकार उसका दृष्टिकोन बदलता

रहेगा। कवि की यही स्थिति है। इस लिए उनकी भावनाओं में हो या अभिवंजन में हो एकरूप नहीं होगा। किन्तु यह तो स्पष्ट है कि उन्होंने जीवन की कसौटी का पार तो किया है। अपार अनुभव ने उसे इन पंक्तियों के लिखने के लिए प्रेरणा दी है कहने में कोई संदेह नहीं है।